कार्यकारी संक्षेप

सशस्त्र हिंसा इंसानों, परिवारों और समुदायों पर भारी मानवीय और आर्थिक बोझ डालती है। दुनिया भर में सशस्त्र संघर्षों और बड़े और छोटे स्तरों की आपराधिक हिंसा के कारण हर साल 7,40,000 से ज्यादा लोगों की जानें जाती हैं। इनमें से अधिकांश – तकरीबन 4,90,000 – लोग तो युद्ध क्षेत्रों के बाहर मौत का शिकार होते हैं। ये आंकड़े दिखाते हैं कि युद्ध सशस्त्र हिंसा का एक रूप भर है और कई इलाकों में तो सबसे अहम भी नहीं।

वैसे तो सशस्त्र हिंसा हर उम्र के लोगों को प्रभावित करती है, लेकिन कुछ समूहों और इलाकों पर ज्यादा असर डालती है। सशस्त्र हिंसा दुनियाभर में 15 से 44 साल की उम्र के लोगों की मौत की चौथी सबसे बड़ी वजह है। 40 से ज्यादा देशों में ये मौत के 10 बड़े कारणों में से एक है। लैटिन अमेरिका और अफ्रिका में सशस्त्र हिंसा मौत का क्रमशः सातवां और नौवां सबसे बड़ा कारण है (पेडेन मैकगी, एंड क्रुग, 2002; डब्ल्यूएचओ, 2008बी)[1] । फिर भी, कुछ जनसांख्यिक समूहों (खासकर युवाओं) और भौगोलिक क्षेत्रों पर इसका दूसरी जगहों से कहीं ज्यादा प्रभाव है। जब तक बारीकी से निगरानी और विश्लेषण ना किया जाए, सशस्त्र हिंसा के पूर्ण आयाम अक्सर अदृश्य ही रह जाते हैं।

मौत की कठिन गणना के अलावा, देशों और समाजों को सशस्त्र हिंसा की भारी इंसानी, सामजिक और आर्थिक कीमत चुकानी पड़ती है। अनगिनत लोग हर साल सशस्त्र हिंसा की वजह से घायल हो जाते हैं, कई बार हमेशा के लिए विकलांग भी हो जाते हैं और असंख्य लोगों को अपने शारीरिक और मानसिक जख्मों के साथ जीना पड़ता है[2]। सशस्त्र हिंसा के हानिकारक प्रभावों में शारीरिक और मानसिक अपंगता, दिमाग और आंतरिक अंगों को क्षति, चोट और जख्म, चिरकालिक दर्द और कई तरह की यौन और प्रजनन संबंधी समस्याएं शामिल हैं (डब्ल्यूएचओ, 2008ए)।

सशस्त्र हिंसा समुदायों की सामाजिक बनावट को भी क्षति पहुंचाती है, डर और असुरक्षा का बीजारोपण करती है, इंसानी और सामाजिक पूंजी को क्षति–विक्षत करती है और विकास के लिए निवेशों और सहायता प्रभावशीलता को कमजोर बनाती है। युद्ध की वजह से होनेवाली मौत और बर्बादी – जो कुछ देशों में केन्द्रित है और साल–दर–साल घटती–बढ़ती है – वार्षिक घरेलू सकल उत्पाद (जीडीपी) में सालाना दो प्रतिशत की कमी ले आती है और संघर्ष खत्म होने के सालों बाद भी इसका असर दिखाई देता रहता है। गैर–संघर्ष सशस्त्र हिंसा (बड़ी और छोटी आपराधिक और राजनीतिक हिंसा) की सालाना आर्थिक कीमत – खोई हुई उत्पादकता के रूप में – 95 बिलियन अमेरिकी डॉलर है जो दुनियाभर में सालाना 163 बिलियन अमेरिकी डॉलर तक जा सकती है।

सशस्त्र हिंसा पर शोध और आंकड़े इकट्ठा करना मुश्किल और कई बार विवादास्पद होता है। हिंसा के पीछे अक्सर राजनीतिक वजह होती है (हिंसा का राजनीतिकरण ना हुआ हो तब भी) और हिंसा शायद ही एकाएक शुरू होती है। विभिन्न समूह अक्सर खतरनाक सशस्त्र हिंसा की व्यापकता को या तो कम करके बताते हैं या छुपाकर रखते हैं, जिससे विश्वसनीय तरीके से आंकड़ों का संग्रहण और निष्पक्ष विश्लेषण खासतौर पर चुनौतीपूर्ण हो जाता है।

1
2
3
4
5
6
7

हालांकि सशस्त्र हिंसा को कम करने के लिए प्रभावी और व्यावहारिक कदमों को बढ़ावा देना इसी विश्वसनीय आंकड़ों के संग्रह और इसके कारणों और नतीजों के विश्लेषण पर निर्भर करता है। "ग्लोबल बर्डन ऑफ आर्म्ड वायलेंस" रिपोर्ट कई तरह के सूत्रों और आंकड़ों के आधार पर दुनिया भर में सशस्त्र हिंसा की व्यापकता, पैमाने और प्रभावों की एक विस्तृत तस्वीर दिखाती है। ये रिपोर्ट सबूतों के आधार पर सशस्त्र हिंसा और विकास के बीच की कड़ियों पर प्रकाश डालती है और सशस्त्र हिंसा और विकास पर जिनिवा घोषणापत्र लागू करने की प्रक्रिया का एक अहम हिस्सा है।

सशस्त्र हिंसा के विभिन्न आयाम

इस रिपोर्ट के अनुसार सशस्त्र हिंसा

"किसी व्यक्ति, समूह, समुदाय या देश के खिलाफ जानबूझकर किया गया नाजायज बल प्रयोग (वास्तविक या धमकी के रूप में) है, जो लोगों की सुरक्षा और सतत विकास को कमजोर बनाती है।"

इस परिभाषा में कई पहलू शामिल हैं, जिसमें संघर्ष और युद्ध से जुड़ी बड़े पैमाने पर हिंसा से लेकर दो समुदायों के बीच की और सामूहिक हिंसा, संगठित आपराधिक और आर्थिक रूप से प्रेरित हिंसा, विभिन्न लोगों या समूहों में सत्ता की लड़ाई के लिए छिड़ी राजनीतिक हिंसा और पारस्परिक और लिंग–आधारित हिंसा शामिल है।[3]

इस रिपोर्ट में सशस्त्र हिंसा के कुछ अत्यंत नाटकीय नतीजों की अंतर्क्षेत्रीय और अंतरराष्ट्रीय तुलना की गई है जिसमें: प्रत्यक्ष संघर्ष में हुई मौत, अप्रत्यक्ष संघर्ष में हुई मौत, संघर्ष के बाद हुई मौत और गैर–संघर्ष मौत जैसे हत्या, गुमशुदगी, अपहरण और सहायता कार्यकर्ताओं की हत्या शामिल है। इस किस्म की सशस्त्र हिंसा आमतौर पर सबसे बेहतर तरीके से दस्तावेज की जाती है, और प्रमुख सूचकों (लीडिंग इन्डिकेटर) के तौर पर दुनिया भर में सशस्त्र हिंसा की व्यापकता और फैलाव और दूसरे कम फैलाव वाली सशस्त्र हिंसा के आयामों को समझने के लिए ठोस आधार का काम करती है।

इस रिपोर्ट में कम सामने आनेवाली महिलाओं के खिलाफ हिंसा पर भी एक अलग अध्याय है और जहां मुमकिन हो सका है, सशस्त्र हिंसा के सबसे प्रमुख रूपों के लिंग–आधारित (जेन्डर–बेस्ड) आयामों को ध्यान में रखा गया है। हालांकि सशस्त्र हिंसा के शिकार (और अपराधी) अधिकांश पुरुष होते हैं, लेकिन लिंग–आधारित हिंसा के कुछ ऐसे रूप हैं जिनका विस्तृत विश्लेषण आवश्यक है और जिनके सही तरीके से लिखित प्रमाण भी उपलब्ध नहीं।

इस रिपोर्ट के महत्वपूर्ण नतीजे इस प्रकार हैं

- हाल के सालों में हर साल सशस्त्र हिंसा – संघर्ष और आपराधिक हिंसा दोनों में – प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से अब तक 7,40,000 से ज्यादा लोगों की जान गई है।
- इनमें से 5,40,000 से ज्यादा मौतें हिंसक हैं, जिनमें से अधिकांश गैर–संघर्ष परिस्थितियों में हुई हैं।
- कम–से–कम 2,00,000 लोग – या शायद इससे कहीं ज्यादा – हर साल संघर्ष क्षेत्रों में गैर–हिंसक कारणों (जैसे कुपोषण, पेचिश, या अन्य आसानी से निवारण होनेवाले रोग) से मरते हैं, जो लोगों पर युद्ध के असर का नतीजा हैं।
- 2004 से 2007 के बीच सशस्त्र संघर्ष की वजह से कम–से–कम 2,08,300 मौत हुई – यानि हर साल औसतन 52,000 मौत। इनमें सिर्फ रिकॉर्ड की गई मौत शामिल है और वास्तविक आंकड़ा इससे कहीं अधिक ऊपर है।
- गैर–संघर्षरत क्षेत्रों में सशस्त्र हिंसा की सालाना आर्थिक लागत 95 बिलियन अमेरिकी डॉलर है, जो कि बढ़कर 163 बिलियन अमेरिकी डॉलर तक जा सकती है – और ये दुनिया के वार्षिक सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) का 0.14 प्रतिशत है।

इन आंकड़ों का इस रिपोर्ट के विभिन्न अध्यायों में विस्तार से विश्लेषण किया गया है, और ये बताते हैं कि गैर–संघर्ष क्षेत्रों में हिंसक मौत और सशस्त्र संघर्षों में अप्रत्यक्ष मौत सशस्त्र हिंसा के वैश्विक बोझ का एक बड़ा हिस्सा है और ऐसे मरनेवालों की संख्या हाल के दिनों में चल रहे युद्धों में होनेवाली हिंसक मौतों से कहीं ज्यादा है।

चित्र 1 में सशस्त्र हिंसा के वैश्विक बोझ के भीतर विभिन्न श्रेणियों में होनेवाली मौत का चित्रण है। हरे रंग के छोटे वृत्त संघर्ष में होनेवाली हिंसक मौत दिखाते हैं, जिनमें नागरिक और योद्धा दोनों शामिल हैं। ये आंकड़ा कुल वैश्विक बोझ का तकरीबन सात फीसदी है। बड़ा नीला वृत्त हिंसक संघर्ष में होनेवाली अप्रत्यक्ष मौतों को दर्शाता है – जो कुल का 27 फीसदी है। गैर–संघर्ष क्षेत्रों में होनेवाली मौत – 4,90,000 – कुल मौत का दो तिहाई यानि 66 फीसदी है।[4] इसके अलावा शारीरिक और मनोवैज्ञानिक रूप से घायल अनगिनत लोग हैं जो सशस्त्र हिंसा के वैश्विक बोझ एक बड़ा हिस्सा हैं।

पारंपरिक रूप से सशस्त्र हिंसा के इन विभिन्न आयामों को अलग–अलग ढंग से प्रदर्शित किया गया है, क्योंकि इनके बुनियादी कारण और समीकरण बिल्कुल अलग–अलग थे। लेकिन आर्थिक रूप से प्रेरित युद्धों के साथ–साथ सशस्त्र हिंसा की बदलती प्रकृति – राजनीतिक और गैर–राजनीतिक हिंसा के बीच की धुंधली होती रेखा, अंतरराष्ट्रीय आपराधिक गैंगों की संख्या में वृद्धि, गैर–राज्य सशस्त्र समूहों का विस्तार, और संघर्ष के बाद कई हालातों में व्याप्त असुरक्षा का ऊंचा स्तर – इन सभी कारणों से सशस्त्र हिंसा के विभिन्न रूपों के बीच स्पष्ट भेद बताना व्यावहारिक और विश्लेषणात्मक रूप से असंभव है।

लेकिन सशस्त्र हिंसा के इन विभिन्न रूपों को अलग–अलग तरीके से देखना दरअसल स्थानीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सशस्त्र हिंसा पर रोक और उसमें कमी लाने के लिए स्पष्ट और सुसंगत नीतियों के विकास के मार्ग में एक बाधा ही है। ग्लोबल बर्डन ऑफ आर्म्ड वायलेंस रिपोर्ट का एक मकसद मानव, समाज और

चित्र 1 मौत की श्रेणियां

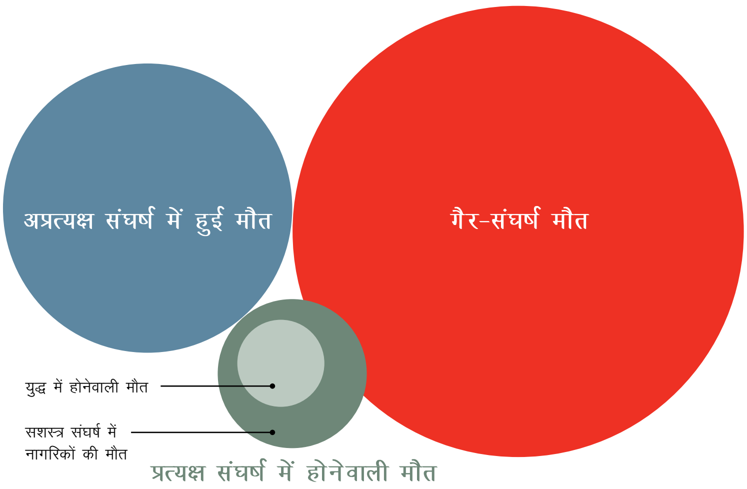

आर्थिक विकास पर सशस्त्र हिंसा के नकारात्मक प्रभाव को बेहतर तरीके से समझना है। ये आवश्यक है कि सिर्फ इसकी एक अभिव्यक्ति या प्रमाण पर ध्यान केन्द्रित ना कर सशस्त्र हिंसा को एक व्यापक दृष्टि से देखा जाए।

ये रिपोर्ट सशस्त्र हिंसा के विभिन्न रूपों के भौगोलिक वितरण और केन्द्रीकरण को भी दर्शाती है। संघर्ष में होनेवाली मौत, जो 2005 से और बढ़ी नजर आती है, अत्यधिक केन्द्रित हैः प्रत्यक्ष संघर्ष में होनेवाली जितनी मौत रिपोर्ट की गई उनमें से दो–तिहाई सिर्फ दस देशों में हुई। अफगानिस्तान, इराक, पाकिस्तान, सोमालिया और श्रीलंका में सशस्त्र संघर्षों को 2007 में खत्म करने से संघर्ष में होनेवाली कुल मौतें दो–तिहाई कम हो जातीं। देशों के भीतर भी सशस्त्र हिंसा आमतौर पर कुछ इलाकों तक सीमित होती है, जबकि कुछ इलाके बिल्कुल अनछुए रह जाते हैं।

ज्यादातर अंतरराष्ट्रीय ध्यान संघर्षों में होनेवाली मौत की रिकॉर्ड में दर्ज संख्या तक सीमित रहता है। वैसे तो ये

आंकड़े निर्णय–निर्माताओं और विश्लेषकों को युद्ध की गहनता और वक्त के साथ उसके विकास के आकलन में मदद करता है, लेकिन अपेक्षाकृत कम आंकड़े (लाखों की संख्या में) सशस्त्र संघर्ष की वजह से होनेवाली अप्रत्यक्ष मौत के भारी बोझ को स्पष्टता से नहीं दिखा पाते। एक न्यूनतम अंदाज है कि पिछले कुछ सालों में औसतन 2,00,000 लोगों की मौत हाल के दिनों में होनेवाले युद्ध की वजह से हुई। ये लोग युद्ध का अप्रत्यक्ष शिकार बने। इनमें से अधिकांश लोग, जिनमें महिलाएं, बच्चे और रोगी शामिल थे, ऐसी बीमारियों की वजह से मरे जिनकी रोकथाम मुमकिन थी। फिर भी ये लोग सशस्त्र हिंसा से उतनी ही बुरी तरह प्रभावित हुए, जो हिंसा का शिकार हुए थे और युद्ध से प्रभावित लोगों की गिनती करते हुए इन अप्रत्यक्ष मौतों की भी गिनती की जानी चाहिए।

अप्रत्यक्ष मौत का स्तर युद्ध की अवधि और गहनता, मूलभूत सुविधाओं की उपलब्धता और मानवीय राहत के प्रयासों के प्रभाव पर निर्भर करता है। युद्ध में मरनेवालों की तुलना में संघर्ष की वजह से अप्रत्यक्ष मौत के अनुपात की 'इनडायरेक्ट कॉन्फलिक्ट डेथ्स' नाम के एक अध्याय में विस्तार से चर्चा की गई है। अध्ययन के मुताबिक हिंसा में मरनेवालों की तुलना में तीन से पंद्रह गुणा ज्यादा लोग अप्रत्यक्ष मौत का शिकार होते हैं। इनमें डेमोक्रैटिक रिपब्लिक ऑफ कॉन्गो का उदाहरण लिया गया है जहां 2002 से हर साल 4,00,000 तक

मानचित्र 4.1 प्रति एक लाख आबादी पर होनेवाली हत्याओं का दर, क्षेत्रों के मुताबिक, 2004

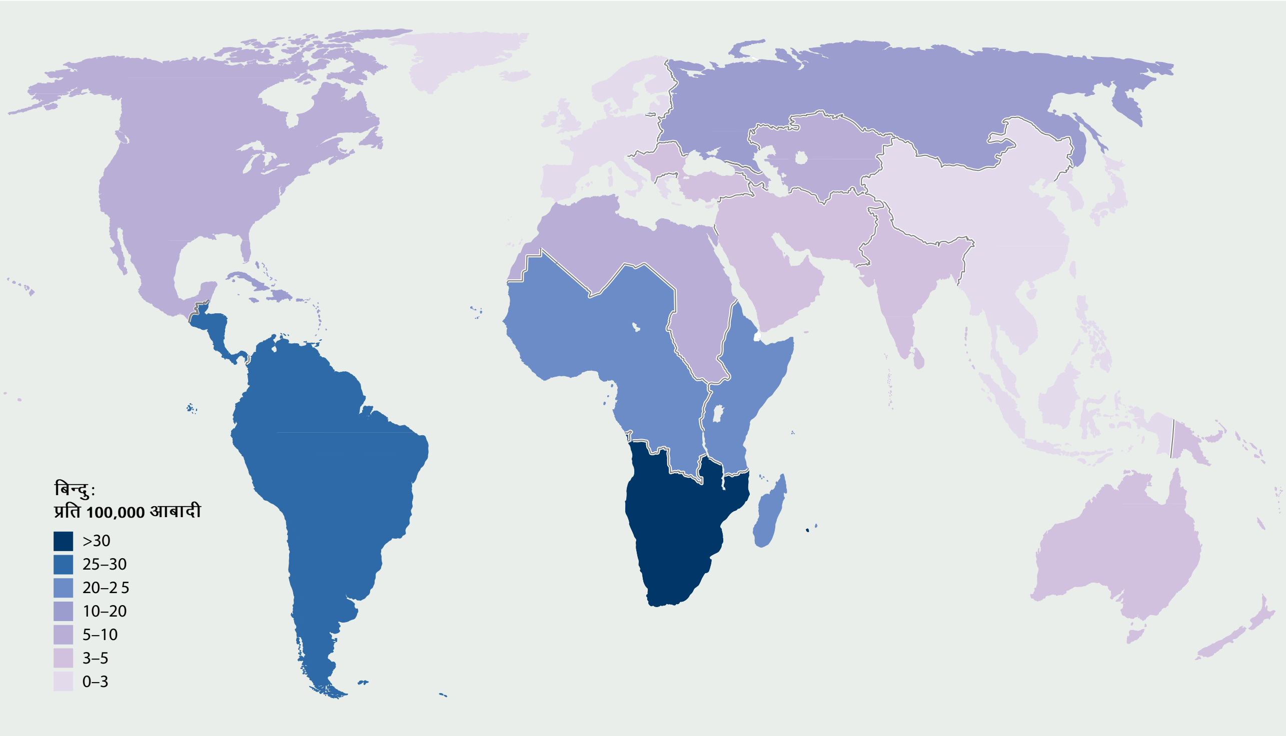

नोट: मानचित्र में दिखाई गई सीमाएं स्वीकृति का सूचक नहीं है

स्रोत: यूएन ऑफिस ऑन ड्रग्स एंड क्राइम (यूएनओडीसी) का अनुमान

लोगों की मौत का अनुमान है, जिनमें से अधिकांश युद्ध का अप्रत्यक्ष शिकार हुए। नतीजतन, इस रिपोर्ट के अनुमान के मुताबिक संघर्ष से होनेवाली 2,00,000 अप्रत्यक्ष मौतों के वैश्विक अनुपात को एक रूढ़िवादी आंकड़ा मान लेना चाहिए।

इस रिपोर्ट से ये भी पता चलता है कि युद्ध के परिणाम की वजह से दरअसल सशस्त्र हिंसा में एक नाटकीय कमी आए, ये आवश्यक नहीं (आर्म्ड वायलेंस आफ्टर वार)। कुछ परिस्थितियों में, कुछ समाजों ने संघर्ष के दौरान होनेवाली हिंसा से ज्यादा संघर्ष के दौरान होनेवाली हिंसा का अनुभव किया। इन समाजों में फिर से युद्ध शुरू होने का खतरा 20–25 फीसदी तक होता है। इन देशों में कुल आबादी का 60 प्रतिशत से ज्यादा हिस्सा युवाओं का होता है और यहां बेरोजगारी की बढ़ती दर, दीर्घ विस्थापन और फिर से सशस्त्र हिंसा के शुरू होने का खतरा बना रहता है।

इनमें से अधिकांश हिंसक मौतें गैर–युद्ध परिस्थितियों में होती हैं, जो छोटे या बड़े आपराधिक या राजनीति से प्रेरित सशस्त्र हिंसा का नतीजा होती है (नॉन कॉन्फलिक्ट आर्म्ड वायलेंस)। सिर्फ 2004 में ही 4,90,000 मौत हुई। ये संख्या सशस्त्र हिंसा में होनेवाली प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष मौत से दुगुनी है। युद्ध भले ही कितने भी हिंसक क्यों ना हो, 'हर रोज' सशस्त्र हिंसा में मरनेवालों की संख्या सशस्त्र संघर्ष से कहीं ज्यादा होती है। अध्याय 4 के चित्र 4.1 में संघर्ष और गैर–संघर्ष सशस्त्र हिंसा के वितरण का चित्रण है, जिसमें प्रति लाख व्यक्ति पर होनेवाली हत्याओं को दर्शाया गया है।

गैर–संघर्ष सशस्त्र हिंसा के भौगोलिक और जनसांख्यिक आयाम महत्वपूर्ण हैं। सब–सहारा अफ्रिका और मध्य और दक्षिण अमेरिका पर सशस्त्र हिंसा का सबसे गंभीर असर दिखाई देता है, जहां हर वर्ष प्रति 1,00,000 व्यक्ति पर 20 से ज्यादा हत्याएं होती हैं, जबकि विश्व में ये दर प्रति 1,00,000 व्यक्ति 7.6 है। दक्षिण अफ्रिका, मध्य अमेरिका और दक्षिण अमेरिका – कोलंबिया, अल सल्वाडोर, ग्वाटेमाला, जमैका, दक्षिण अफ्रिका और वेनेजुएला को मिलाकर – में हिंसा की वजह से होनेवाली मौतों की सबसे ज्यादा संख्या दर्ज की गई है। आधिकारिक पुलिस आंकड़ों के मुताबिक वेनेजुएला में प्रति 1,00,000 व्यक्ति 37 जानें गईं तो अल सल्वाडोर में 59 जानें गईं।[5]

फोटो ▲ तिजुआनास, मेक्सिको, 2008 में एक संघर्ष के दौरान के बच्चे को बचाने की कोशिश करता एक पुलिसकर्मी
© जॉर्ज ड्यूनस/रॉयटर्स

हथियार भी मायने रखते हैं। 60 प्रतिशत से ज्यादा हत्याएं बंदूकों से हुईं – जो मध्य अमेरिका में 77 प्रतिशत तक पहुंचीं और पश्चिमी यूरोप में 19 प्रतिशत तक रहीं। सशस्त्र हिंसा में लिंग से जुड़ा भी एक पहलू हैः हालांकि हिंसा के ज्यादातर शिकार पुरुष होते हैं, "अधिक हिंसा" वाले देशों में हिंसा के शिकार कुल लोगों में से 10 प्रतिशत महिलाएं होती हैं, जबकि "कम हिंसा" वाले देशों में ये आंकड़ा 30 प्रतिशत तक चला

जाता है। इससे पता चलता है कि अंतरंग साथी के साथ होनेवाली हिंसा सशस्त्र हिंसा के दूसरे रूपों के साथ बढ़े या घटे, ये जरूरी नहीं, और ये भी जरूरी नहीं कि सशस्त्र हिंसा में कमी आने पर महिलाओं के साथ होनेवाली हिंसा में भी कमी आए।

सशस्त्र हिंसा के कई और रूप हैं जिनमें से अधिकांश अदृश्य होते हैं जो दुनिया भर में लोगों की वास्तविक और कथित सुरक्षा को कमजोर बनाते हैं। कुछ क्षेत्रों में देश (या देशों के एजेंट) सशस्त्र हिंसा में शामिल होते हैं या उनका शिकार बनते हैं। कम–से–कम 30 देशों में 50 से अधिक अदालत से इतर (एक्स्ट्राज्युडिशियल) हत्याएं रिपोर्ट की गईं। एक दर्जन से ज्यादा देशों में बलपूर्ण "गुमशुदगी" की घटनाएं "अक्सर" होती हैं जबकि 20 और देशों में ये गुमशुदगी कभी–कभी होती है। फिरौती के लिए अपहरण भी बढ़ा है और 2007 में लैटिन अमेरिका, एशिया, अफ्रिका और मध्य–पूर्व में ऐसे 1,425 मामले दर्ज किए गए।

सशस्त्र हिंसा सचमुच ऐसी हजारों आपस में जुड़ी हुई घटनाओं को बढ़ावा देती हैं जिनका कई स्तरों पर समाज पर नकारात्मक असर पड़ता है। इससे इंसानी और भौतिक पूंजी और अवसरों की कीमत को नुकसान पहुंच सकता है, और इसके आर्थिक नतीजे तो सबसे ज्यादा सबसे गरीब और सबसे कमजोर लोगों को भुगतने पड़ते हैं। संघर्ष और गैर–संघर्ष, दोनों हालातों में सशस्त्र हिंसा की आर्थिक कीमत चुकानी पड़ती है और विकास पर इसका गहरा नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। आकस्मिकता मूल्यांकन दृष्टिकोण का इस्तेमाल करते हुए देखा जाए तो सशस्त्र हिंसा की वजह से होनेवाली असुरक्षा की कीमत हर साल प्रति व्यक्ति 70 अमेरिकी डॉलर तक होती है, और पूरी दुनिया पर इसका 400 बिलियन अमेरिकी डॉलर तक पड़ता है।

फोटो ▼ बगदाद के कैंपसारा में एक कार बम विस्फोट के बाद घटनास्थल पर खड़े लोग
© मोइसेस समन/पैनोस पिक्चर्स

सशस्त्र हिंसा में कमी और उसपर रोक

सशस्त्र हिंसा को रोका जा सकता है। यही नहीं, वक्त पर की गई पहल से जानें बच सकती हैं और सशस्त्र हिंसा के कुल बोझ में कमी लाई जा सकती है। अध्याय 5 में पेश किया गया चित्र 5.1 दर्शाता है कि जीवन प्रत्याशा (लाइफ एक्सपेक्टेंसी) में महत्वपूर्ण बढ़त हासिल की जा सकती है – कई मध्य और दक्षिण अमेरिकी देशों में तो पुरुषों के लिए एक वर्ष से ज्यादा। हालांकि ये रिपोर्ट सशस्त्र हिंसा को रोकने के लिए किसी ठोस रणनीति पर केन्द्रित नहीं है, लेकिन ये रिपोर्ट कई ऐसे महत्वपूर्ण बिंदुओं की ओर इशारा करती है जो सशस्त्र हिंसा पर रोक और कमी को बढ़ावा देते हैं (डब्ल्यूएचओ, 2008ए)। ताजातरीन आंकड़ों और शोध के आधार पर इस रिपोर्ट में ये भी दिखाया गया है कि कैसे सशस्त्र हिंसा के समाधान में मिली असफलता विकास और आर्थिक वृद्धि को कमजोर बनाती है। कम–से–कम ये रिपोर्ट अंतरराष्ट्रीय सहायता दाताओं और कार्यकर्ताओं, सरकारी अफसरों और सामाजिक संस्थानों को ये समझने में मदद पहुंचाएगी कि सुरक्षा को बढ़ावा देना इंसान, समाज और अर्थव्यवस्था के विकास के केन्द्र में है।

व्यावहारिक स्तर पर, ये जरूरी है कि प्रासंगिक राष्ट्रीय

मानचित्र 5.1 गैर–संघर्ष सशस्त्र हिंसा की अनुपस्थिति में विभिन्न देशों में जीवन प्रत्याशा (लाइफ एक्सपेक्टेंसी) में होनेवाली बढ़त, 2004

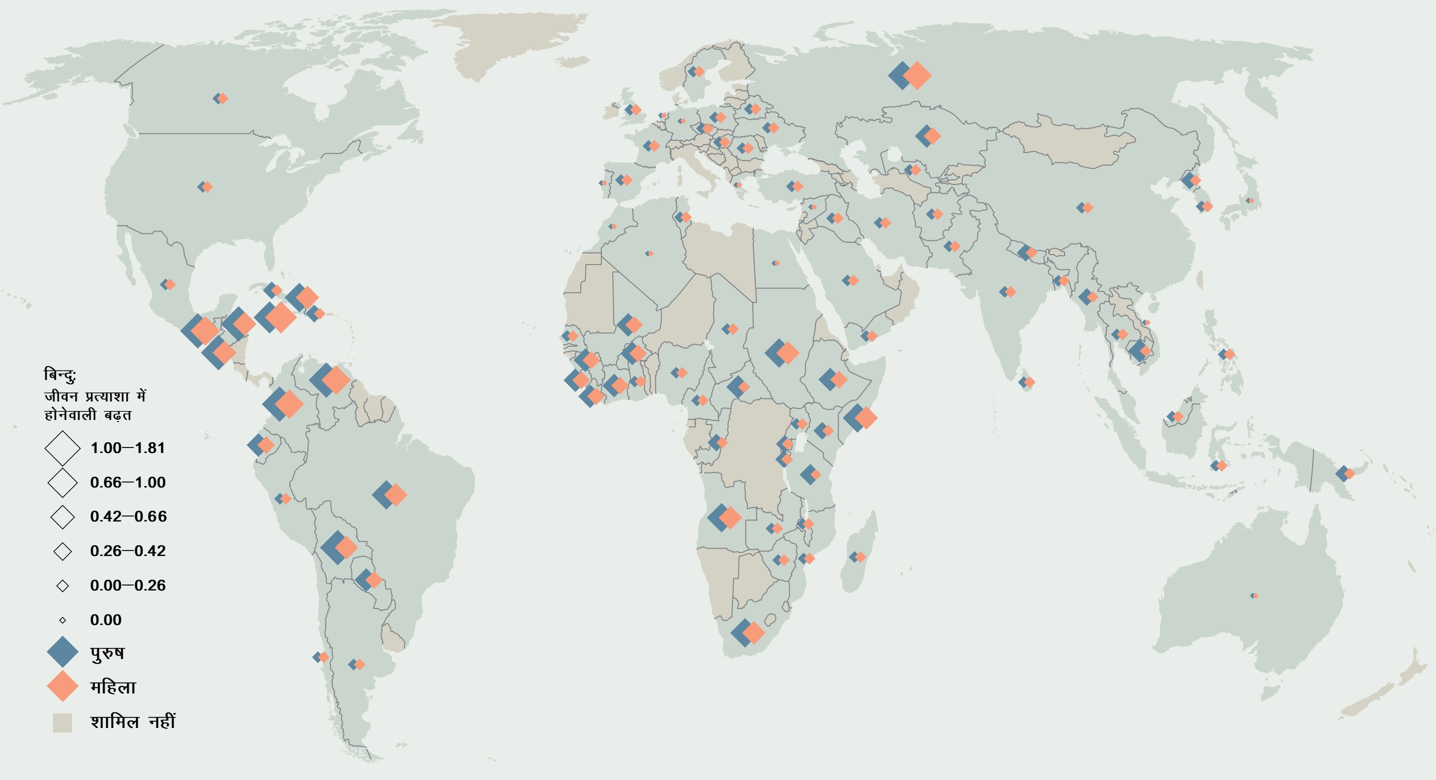

स्रोत: सीईआरएसी

और अंतरराष्ट्रीय एजेंसियां सशस्त्र हिंसा की प्रवृत्तियों का नियमित आकलन करें। इसके लिए सशस्त्र हिंसा के खतरों और प्रभावों को मापने के लिए यंत्ररचना विकसित करने के लिए निवेश की आवश्यकता होगी। साथ ही सशस्त्र हिंसा को रोकने और उसमें कमी लाने संबंधी कार्यक्रमों के प्रभाव की जांच के लिए समाज विज्ञान और सार्वजनिक स्वास्थ्य विधि तैयार करना होगी। अंतरराष्ट्रीय, राष्ट्रीय और स्थानीय आंकड़ों के संग्रहण और निगरानी को मजबूत बनाना, प्रभावी पहलों की योजना बनाने, प्राथमिकताओं की पहचान करने, गतिविधियों का मूल्यांकन करने और जिन्दगी बचाने की दिशा में पहला अहम कदम है।

सशस्त्र हिंसा में रोकथाम और कमी लाने में अगर निवेश होगा तो उसका मतलब निजी और सरकारी सहयोगियों की पहल शुरू करने, उन्हें लागू करने और उसकी निगरानी करने की क्षमता को मजबूती प्रदान करना होगा। इसके लिए सर्वे के माध्यम से स्थानीय हालातों और मुद्दों की गहराई से समझ विकसित करने की जरूरत है। इससे ये मांग भी सामने आती है कि सशस्त्र हिंसा के कई और अक्सर आपस में जुड़े हुए कारण होते हैं और ये कारण एक ही दिशा में नहीं चलते। आखिर में, उन मानवाधिकार और विकास कार्यकर्ताओं की सुरक्षा बचाए रखने की भी आवश्यकता होती है – इनमें से कई अपने कर्तव्य का निर्वाह करते

हुए शहीद होते हैं। इस रिपोर्ट में ये भी देखा गया है कि सहायता कार्यकर्ताओं की हिंसक मौत की दर प्रति 1,00,000 पर करीब 60 है, जो याद दिलाता है कि मानवधिकार के लिए काम कर रहे कार्यकर्ता दुनिया भर में कैसे खतरों का सामना कर रहे हैं।

'ग्लोबल बर्डन ऑफ आर्म्ड वायलेंस' रिपोर्ट सशस्त्र हिंसा पर रोक और कमी का एजेंडा लागू करने की दिशा में पहला कदम है। ये रिपोर्ट सबूतों के आधार को विकसित करने और मजबूत बनाने की महत्ता पर भी प्रकाश डालता है – पहचान करता है कि कौन कमजोर है, सशस्त्र हिंसा का रूप क्या है, किसके द्वारा ये हिंसा हुई और किन परिस्थितियों में हुई। दुनिया पर सशस्त्र हिंसा के बोझ को कम करने और दुनिया भर में इंसानी सुरक्षा में सुधार लाने की दिशा में ये अहम कदम है।

नोट

1 ये तस्वीरें डब्ल्यूएचओ ग्लोबल बर्डन ऑफ डेथ के डाटाबेस से ली गई हैं और हिंसा की विभिन्न श्रेणियों और युद्ध में होनेवाली हिंसा से हुई मौत को जोड़कर इनकी गिनती की गई है। सशस्त्र हिंसा दुनियाभर में मौत का अठारहवां सबसे बड़ा कारण है।

2 वर्ल्ड हेल्थ ऑर्गनाइजेशन के मुताबिक हिंसा की वजह से मरनेवालों से दस गुणा संख्या घायल होनेवालों की होती है। (डब्ल्यूएचओ, 2008ए, पेज 4)

3 इस परिभाषा में स्वयं की ओर निर्देशित हिंसा (आत्महत्या) शामिल नहीं है। डब्ल्यूएचओ के मुताबिक स्वयं की ओर निर्देशित हिंसा की वजह से होनेवाली मौत संघर्ष या अन्य हिंसा से कहीं ज्यादा होती है (डब्ल्यूएचओ, 2008ए, पेज 4)। एक अनुमान के मुताबिक 16 लाख मौत हिंसा से होती है जिसमें आत्महत्या भी शामिल है (कुल मौत का 54 प्रतिशत)। परिभाषा का एक तात्पर्य हिंसा के शारीरिक रूप पर केन्द्रित करना है और दूसरे रूपों जैसे – भौतिक, सांस्कृतिक और मनोवैज्ञानिक हिंसा को शामिल नहीं करना है।

4 लाल और हरे वृत्त किसी–किसी हिंसा के आंकड़ों में दोहरी गिनती की संभावना को दर्शाते हैं (नॉन–कॉन्फलिक्ट आर्म्ड वायलेंस)।

5 ये तस्वीरें राष्ट्रीय पुलिस स्रोतों से ली गई हैं। देखः http://www.derechos.org.ve/publicaciones/infanual/2005_06/pdf/seguridadciudadana.pdf (Venezuela); http://www.fgr.gob.sv/estadisticas/homicidios2005.pdf (El Salvador); www.saps.gov.za/statistics/reports/crimestats/2007/_pdf/category/murder.pdf (South Africa); http://www.undp.org.gt/data/publicacion/Informe%20Estad%C3%ADstico %20de%20la%20Violencia%20en%20Guatemala%20final.pdf (Guatemala); CNP (n.d.).